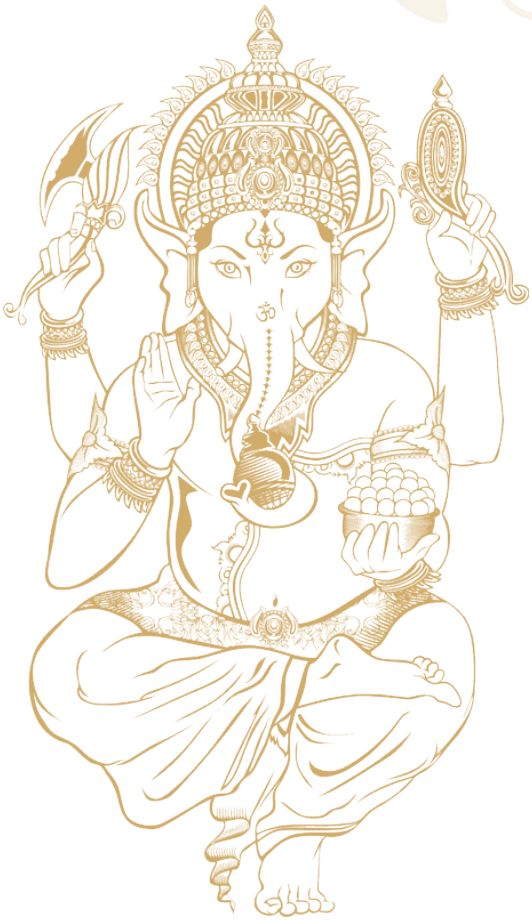

Mr.tarina

30 Apr 2015

12:26 PM

Indore

Model: Web-MyKundli **Order No: 120664901**

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	स्त्रीलिंग
जन्म तिथि	**30/04/2015**
दिन	गुरुवार
जन्म समय	**12:26:26 घंटे**
इष्ट	16:18:14 घटी
स्थान	**Indore**
राज्य	Madhya Pradesh
देश	India

अक्षांश	22:42:00 उत्तर
रेखांश	75:54:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:26:24 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	12:00:02 घंटे
वेलान्तर	00:02:43 घंटे
साम्पातिक काल	02:31:40 घंटे
सूर्योदय	05:55:08 घंटे
सूर्यास्त	18:52:37 घंटे
दिनमान	12:57:29 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	ग्रीष्म
सूर्य के अंश	15:33:25 मेष
लग्न के अंश	18:42:50 कर्क

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	कर्क - चन्द्र
राशि-स्वामी	**कन्या - बुध**
नक्षत्र-चरण	**उ०फाल्गुनी - 2**
नक्षत्र स्वामी	सूर्य
योग	व्याघात
करण	बव
गण	मनुष्य
योनि	गौ
नाड़ी	आद्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	मानव
वर्ग	श्वान
युँजा	मध्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	टो-टोनी
पाया(राशि-नक्षत्र)	ताम्र - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	वृष

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1937	वैशाख	10
पंजाबी	संवत : 2072	वैशाख	17
बंगाली	सन् : 1422	वैशाख	16
तमिल	संवत : 2072	चिथिराई	17
केरल	कोल्लम : 1190	मेदम	16
नेपाली	संवत : 2072	वैशाख	17
चैत्रादि	संवत : 2072	वैशाख	शुक्ल 12
कार्तिकादि	संवत : 2072	वैशाख	शुक्ल 12

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 12
तिथि समाप्ति काल _____: 28:09:04
जन्म तिथि _____: 12
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: उ०फाल्गुनी
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 27:45:48 घंटे
जन्म योग _____: उ०फाल्गुनी
सूर्योदय कालीन योग ____: व्याघात
योग समाप्ति काल _____: 22:27:40 घंटे
जन्म योग _____: व्याघात
सूर्योदय कालीन करण ____: बव
करण समाप्ति काल _____: 14:57:25 घंटे
जन्म करण _____: बव
भयात _____: 29:09:32
भभोग _____: 67:27:55
भोग्य दशा काल _____: सूर्य 3 वर्ष 4 मा 29 दि

घात चक्र

मास _____: भाद्रपद
तिथि _____: 5-10-15
दिन _____: शनिवार
नक्षत्र _____: श्रवण
योग _____: शुक्ल
करण _____: कौलव
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मेष
लग्न _____: मीन
सूर्य _____: मेष
चन्द्र _____: वृश्चिक
मंगल _____: वृष
बुध _____: मीन
गुरु _____: मिथुन
शुक्र _____: कर्क
शनि _____: मीन
राहु _____: सिंह

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

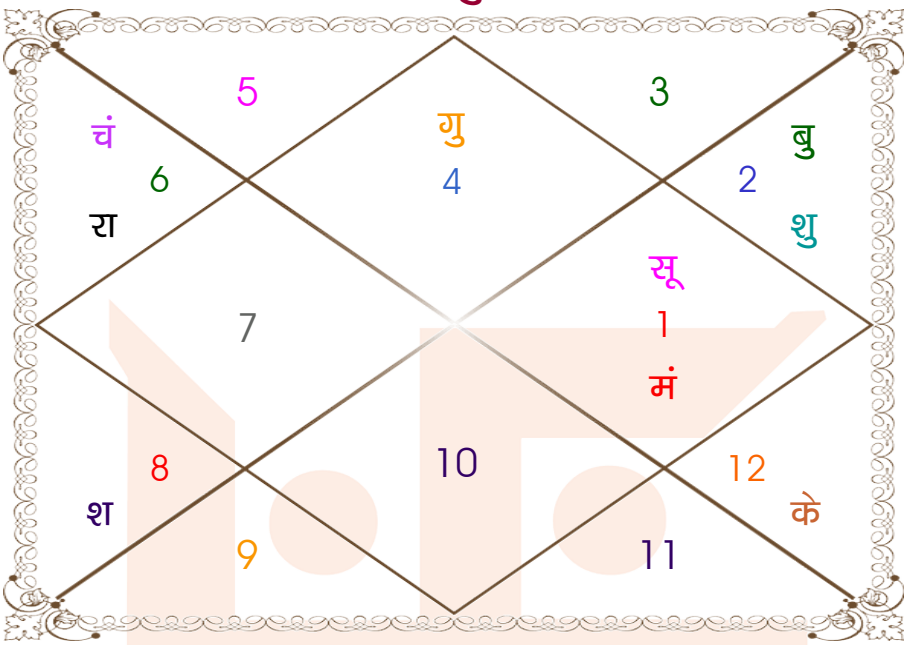

चन्द्र कुंडली

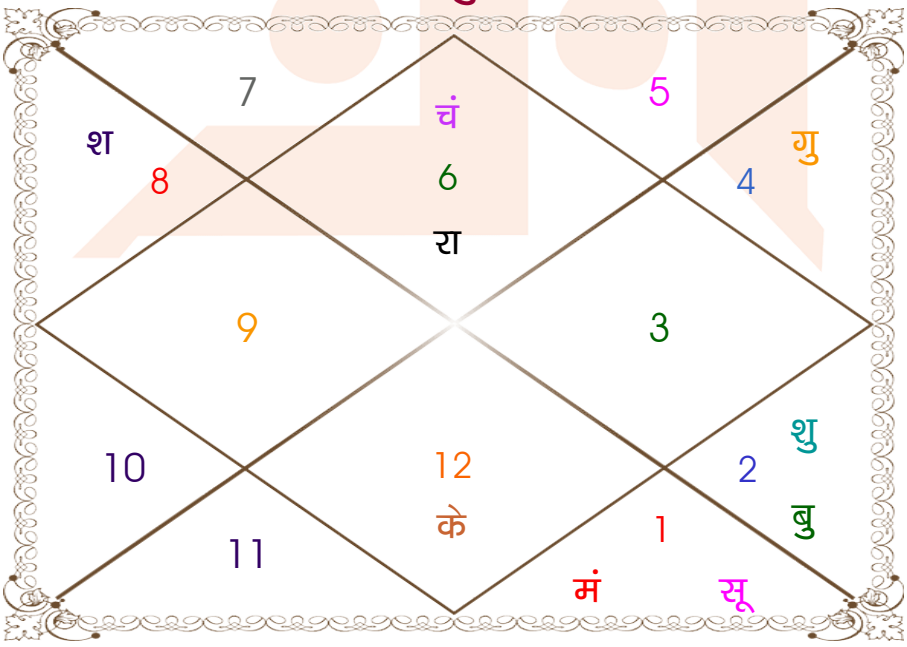

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

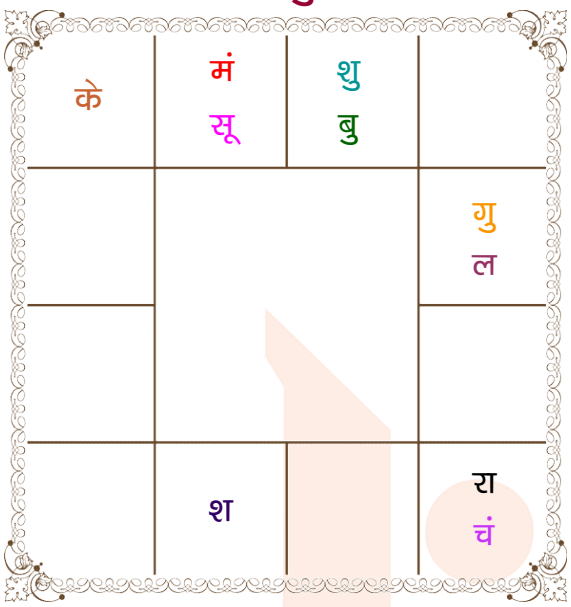

लग्न कुंडली

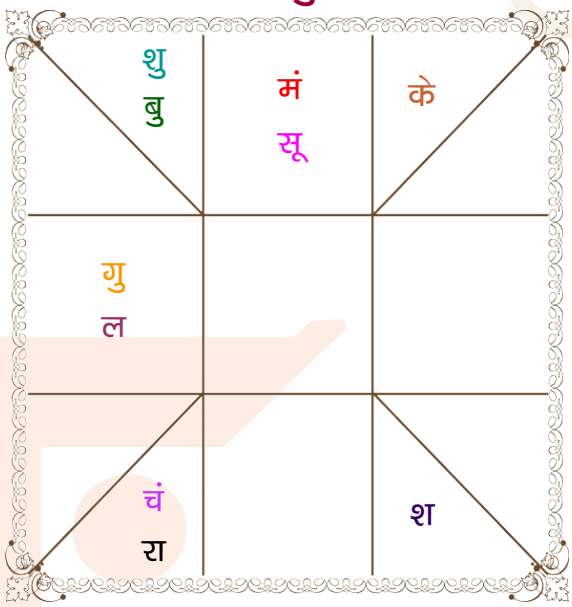

विंशोत्तरी
सूर्य 3वर्ष 4मा 29दि

सूर्य

30/04/2015

28/09/2132

सूर्य	28/09/2018
चन्द्र	27/09/2028
मंगल	28/09/2035
राहु	27/09/2053
गुरु	27/09/2069
शनि	27/09/2088
बुध	28/09/2105
केतु	28/09/2112
शुक्र	28/09/2132

योगिनी
सिद्धा 3वर्ष 11मा 23दि

संकटा

23/04/2019

23/04/2027

संकटा	01/02/2021
मंगला	23/04/2021
पिंगला	02/10/2021
धान्या	03/06/2022
भ्रामरी	23/04/2023
भद्रिका	02/06/2024
उल्का	02/10/2025
सिद्धा	23/04/2027

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कर्क	18:42:50	318:36:55	आश्लेषा	1	9	चंद्र	बुध	केतु	---
सूर्य			मेष	15:33:25	00:58:16	भरणी	1	2	मंगल	शुक्र	सूर्य	उच्च राशि
चंद्र			कन्या	02:24:58	11:50:53	उ०फाल्गुनी	2	12	बुध	सूर्य	गुरु	मित्र राशि
मंगल		अ	मेष	27:30:46	00:43:00	कृतिका	1	3	मंगल	सूर्य	चंद्र	स्वराशि
बुध			वृष	04:46:27	01:28:52	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	शनि	मित्र राशि
गुरु			कर्क	19:14:01	00:03:54	आश्लेषा	1	9	चंद्र	बुध	केतु	उच्च राशि
शुक्र			वृष	27:22:15	01:07:40	मृगशिरा	2	5	शुक्र	मंगल	गुरु	स्वराशि
शनि	व		वृश्चि	09:11:21	00:03:53	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	शुक्र	शत्रु राशि
राहु			कन्या	15:44:14	00:01:07	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	शनि	मूलत्रिकोण
केतु			मीन	15:44:14	00:01:07	उ०भाद्रपद	4	26	गुरु	शनि	गुरु	मूलत्रिकोण
हर्ष			मीन	23:42:49	00:03:14	रेवती	3	27	गुरु	बुध	मंगल	---
नेप			कुंभ	15:15:00	00:01:20	शतभिषा	3	24	शनि	राहु	शुक्र	---
प्लूटो	व		धनु	21:25:54	00:00:23	पूर्वाषाढ़ा	3	20	गुरु	शुक्र	गुरु	---
दशम भाव			मेष	16:15:30	--	भरणी	--	2	मंगल	शुक्र	चंद्र	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:04:18

लग्न-चलित

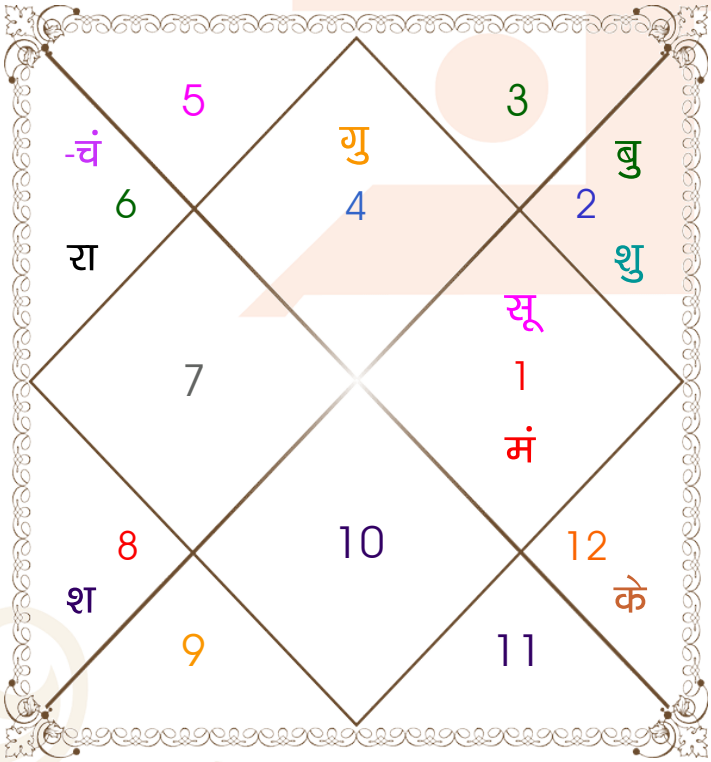

चन्द्र कुंडली

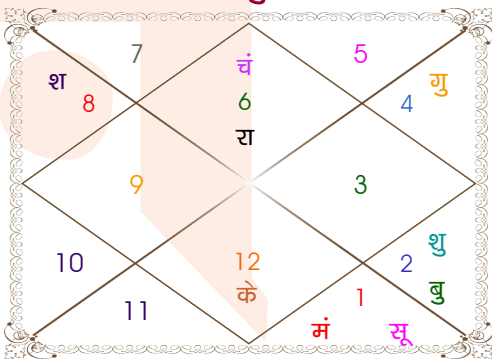

नवमांश कुंडली

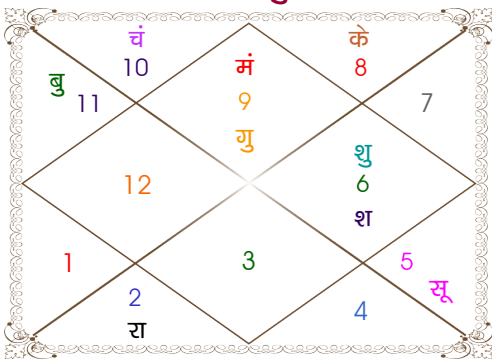

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कर्क	03:18:17	कर्क	18:42:50
2	सिंह	03:18:17	सिंह	17:53:43
3	कन्या	02:29:10	कन्या	17:04:36
4	तुला	01:40:03	तुला	16:15:30
5	वृश्चिक	01:40:03	वृश्चिक	17:04:36
6	धनु	02:29:10	धनु	17:53:43
7	मकर	03:18:17	मकर	18:42:50
8	कुम्भ	03:18:17	कुम्भ	17:53:43
9	मीन	02:29:10	मीन	17:04:36
10	मेष	01:40:03	मेष	16:15:30
11	वृष	01:40:03	वृष	17:04:36
12	मिथुन	02:29:10	मिथुन	17:53:43

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कर्क	18:42:50
2	सिंह	14:33:51
3	कन्या	14:03:22
4	तुला	16:15:30
5	वृश्चिक	18:35:33
6	धनु	19:25:03
7	मकर	18:42:50
8	कुम्भ	14:33:51
9	मीन	14:03:22
10	मेष	16:15:30
11	वृष	18:35:33
12	मिथुन	19:25:03

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा
उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी

चलित कुंडली

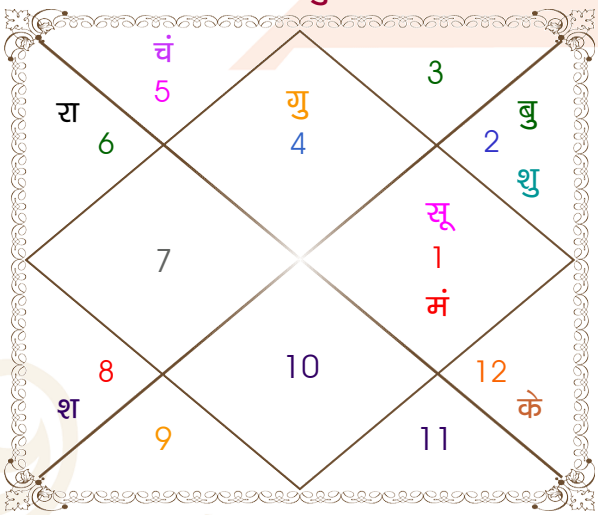

भाव कुंडली

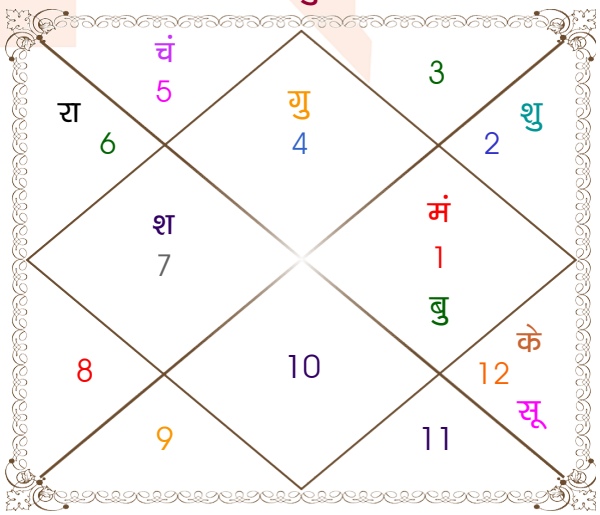

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 3 वर्ष 4 मास 29 दिन

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
30/04/2015		28/09/2018		27/09/2028		28/09/2035		27/09/2053	
28/09/2018		27/09/2028		28/09/2035		27/09/2053		27/09/2069	
	00/00/0000	चंद्र	29/07/2019	मंगल	23/02/2029	राहु	10/06/2038	गुरु	15/11/2055
	00/00/0000	मंगल	27/02/2020	राहु	14/03/2030	गुरु	03/11/2040	शनि	29/05/2058
	00/00/0000	राहु	28/08/2021	गुरु	18/02/2031	शनि	10/09/2043	बुध	03/09/2060
	30/04/2015	गुरु	28/12/2022	शनि	28/03/2032	बुध	29/03/2046	केतु	10/08/2061
गुरु	04/08/2015	शनि	28/07/2024	बुध	26/03/2033	केतु	16/04/2047	शुक्र	10/04/2064
शनि	16/07/2016	बुध	28/12/2025	केतु	22/08/2033	शुक्र	16/04/2050	सूर्य	27/01/2065
बुध	22/05/2017	केतु	29/07/2026	शुक्र	22/10/2034	सूर्य	11/03/2051	चंद्र	29/05/2066
केतु	27/09/2017	शुक्र	28/03/2028	सूर्य	27/02/2035	चंद्र	09/09/2052	मंगल	05/05/2067
शुक्र	28/09/2018	सूर्य	27/09/2028	चंद्र	28/09/2035	मंगल	27/09/2053	राहु	27/09/2069

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
27/09/2069		27/09/2088		28/09/2105		28/09/2112		28/09/2132	
27/09/2088		28/09/2105		28/09/2112		28/09/2132		00/00/0000	
शनि	30/09/2072	बुध	24/02/2091	केतु	24/02/2106	शुक्र	29/01/2116	सूर्य	16/01/2133
बुध	10/06/2075	केतु	21/02/2092	शुक्र	27/04/2107	सूर्य	28/01/2117	चंद्र	17/07/2133
केतु	19/07/2076	शुक्र	22/12/2094	सूर्य	01/09/2107	चंद्र	29/09/2118	मंगल	22/11/2133
शुक्र	19/09/2079	सूर्य	28/10/2095	चंद्र	01/04/2108	मंगल	29/11/2119	राहु	17/10/2134
सूर्य	31/08/2080	चंद्र	29/03/2097	मंगल	29/08/2108	राहु	28/11/2122	गुरु	01/05/2135
चंद्र	01/04/2082	मंगल	26/03/2098	राहु	16/09/2109	गुरु	29/07/2125		00/00/0000
मंगल	11/05/2083	राहु	13/10/2100	गुरु	23/08/2110	शनि	28/09/2128		00/00/0000
राहु	17/03/2086	गुरु	19/01/2103	शनि	02/10/2111	बुध	30/07/2131		00/00/0000
गुरु	27/09/2088	शनि	28/09/2105	बुध	28/09/2112	केतु	28/09/2132		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल सूर्य 3 वर्ष 4 मा 26 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल	
28/07/2024		28/12/2025		29/07/2026		28/03/2028		27/09/2028	
28/12/2025		29/07/2026		28/03/2028		27/09/2028		23/02/2029	
बुध	09/10/2024	केतु	09/01/2026	शुक्र	07/11/2026	सूर्य	07/04/2028	मंगल	06/10/2028
केतु	09/11/2024	शुक्र	14/02/2026	सूर्य	08/12/2026	चंद्र	22/04/2028	राहु	28/10/2028
शुक्र	03/02/2025	सूर्य	24/02/2026	चंद्र	27/01/2027	मंगल	02/05/2028	गुरु	17/11/2028
सूर्य	01/03/2025	चंद्र	14/03/2026	मंगल	04/03/2027	राहु	30/05/2028	शनि	11/12/2028
चंद्र	13/04/2025	मंगल	26/03/2026	राहु	03/06/2027	गुरु	23/06/2028	बुध	01/01/2029
मंगल	13/05/2025	राहु	27/04/2026	गुरु	23/08/2027	शनि	22/07/2028	केतु	09/01/2029
राहु	30/07/2025	गुरु	26/05/2026	शनि	28/11/2027	बुध	17/08/2028	शुक्र	03/02/2029
गुरु	07/10/2025	शनि	28/06/2026	बुध	22/02/2028	केतु	28/08/2028	सूर्य	11/02/2029
शनि	28/12/2025	बुध	29/07/2026	केतु	28/03/2028	शुक्र	27/09/2028	चंद्र	23/02/2029

मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु	
23/02/2029		14/03/2030		18/02/2031		28/03/2032		26/03/2033	
14/03/2030		18/02/2031		28/03/2032		26/03/2033		22/08/2033	
राहु	22/04/2029	गुरु	28/04/2030	शनि	23/04/2031	बुध	19/05/2032	केतु	03/04/2033
गुरु	12/06/2029	शनि	21/06/2030	बुध	19/06/2031	केतु	09/06/2032	शुक्र	28/04/2033
शनि	12/08/2029	बुध	08/08/2030	केतु	13/07/2031	शुक्र	08/08/2032	सूर्य	06/05/2033
बुध	05/10/2029	केतु	28/08/2030	शुक्र	18/09/2031	सूर्य	26/08/2032	चंद्र	18/05/2033
केतु	27/10/2029	शुक्र	24/10/2030	सूर्य	08/10/2031	चंद्र	26/09/2032	मंगल	27/05/2033
शुक्र	30/12/2029	सूर्य	10/11/2030	चंद्र	11/11/2031	मंगल	17/10/2032	राहु	18/06/2033
सूर्य	18/01/2030	चंद्र	09/12/2030	मंगल	05/12/2031	राहु	10/12/2032	गुरु	08/07/2033
चंद्र	19/02/2030	मंगल	28/12/2030	राहु	03/02/2032	गुरु	27/01/2033	शनि	01/08/2033
मंगल	14/03/2030	राहु	18/02/2031	गुरु	28/03/2032	शनि	26/03/2033	बुध	22/08/2033

मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु	
22/08/2033		22/10/2034		27/02/2035		28/09/2035		10/06/2038	
22/10/2034		27/02/2035		28/09/2035		10/06/2038		03/11/2040	
शुक्र	01/11/2033	सूर्य	28/10/2034	चंद्र	16/03/2035	राहु	23/02/2036	गुरु	05/10/2038
सूर्य	22/11/2033	चंद्र	08/11/2034	मंगल	29/03/2035	गुरु	03/07/2036	शनि	21/02/2039
चंद्र	28/12/2033	मंगल	15/11/2034	राहु	30/04/2035	शनि	06/12/2036	बुध	25/06/2039
मंगल	21/01/2034	राहु	05/12/2034	गुरु	28/05/2035	बुध	25/04/2037	केतु	15/08/2039
राहु	26/03/2034	गुरु	22/12/2034	शनि	01/07/2035	केतु	22/06/2037	शुक्र	08/01/2040
गुरु	22/05/2034	शनि	11/01/2035	बुध	31/07/2035	शुक्र	03/12/2037	सूर्य	21/02/2040
शनि	29/07/2034	बुध	29/01/2035	केतु	13/08/2035	सूर्य	21/01/2038	चंद्र	04/05/2040
बुध	27/09/2034	केतु	05/02/2035	शुक्र	17/09/2035	चंद्र	13/04/2038	मंगल	24/06/2040
केतु	22/10/2034	शुक्र	27/02/2035	सूर्य	28/09/2035	मंगल	10/06/2038	राहु	03/11/2040

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	3
भाग्यांक	6
मित्र अंक	3, 5, 7, 9, 6
शत्रु अंक	1, 4, 8
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिन	मंगल, सोम, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, चन्द्र, गुरु
मित्र राशि	वृष, मिथुन
मित्र लग्न	तुला, मीन, वृष
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	मोती
शुभ उपरत्न	चन्द्रमणि
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	श्वेत
शुभ दिशा	पश्चिमोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	शंख, कपूर, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दही

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	100%	व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
पुखराज	गुरु	88%	स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
लहसुनिया	केतु	86%	भाग्योदय, स्वास्थ्य
मोती	चंद्र	81%	पराक्रम, स्वास्थ्य
माणिक्य	सूर्य	80%	व्यावसायिक उन्नति, धन
हीरा	शुक्र	67%	धनार्जन, सुख
गोमेद	राहु	60%	पराक्रम, धनार्जन
पन्ना	बुध	9%	हानि, व्यय, पराक्रम हानि
नीलम	शनि	9%	सन्तति कष्ट, दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना

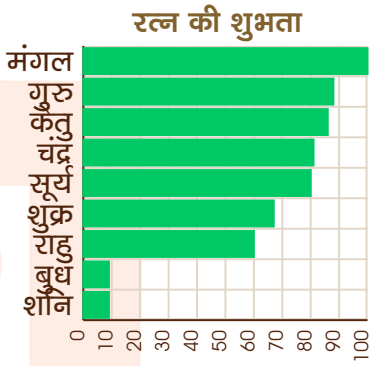

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
सूर्य	28/09/2018	92%	88%	100%	9%	94%	54%	0%	44%	74%
चंद्र	27/09/2028	86%	94%	100%	22%	88%	67%	9%	44%	74%
मंगल	28/09/2035	86%	88%	100%	0%	94%	67%	9%	44%	93%
राहु	27/09/2053	67%	69%	92%	9%	88%	73%	22%	72%	74%
गुरु	27/09/2069	86%	88%	100%	0%	100%	54%	9%	60%	86%
शनि	27/09/2088	67%	69%	92%	22%	88%	73%	34%	66%	74%
बुध	28/09/2105	86%	69%	100%	34%	88%	73%	9%	60%	86%
केतु	28/09/2112	67%	69%	100%	9%	88%	73%	0%	44%	99%
शुक्र	28/09/2132	67%	69%	100%	22%	88%	79%	22%	66%	93%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढेसाती प्रथम ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
साढेसाती तृतीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044

द्वितीय चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	30/08/2068-04/11/2070	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	----------

तृतीय चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	21/05/2086-21/05/2086	08/02/2087-18/07/2088	31/10/2088-05/04/2089
साढेसाती प्रथम ढैया	18/08/2095-11/10/2097	02/05/2098-20/06/2098	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	11/10/2097-02/05/2098	20/06/2098-26/12/2099	17/03/2100-16/09/2100
साढेसाती तृतीय ढैया	26/12/2099-17/03/2100	16/09/2100-03/12/2102	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	शत्रु व रोग
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	व्यावसायिक परेशानी
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	धन
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	पराक्रम
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	सुख

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति चन्द्रमा से अष्टम भाव में है। अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं। चूंकि आपकी कुंडली में यह दोष भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। यदा कदा आप पित या गर्मी के द्वारा शारीरिक परेशानी की अनुभूति करेंगी। पति का स्वास्थ्य भी मध्यम ही रहेगा तथा स्वभाव से यदा कदा वे उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन कर सकते हैं। इससे परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न होंगे लेकिन इसका प्रभाव अल्पकालिक रहेगा तथा कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपको अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को पूर्ण करने में अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। साथ ही विवाह में भी किंचित मात्रा में विलम्ब हो सकता है लेकिन अन्त में आपको सफलता अवश्य प्राप्त होगी। आपका दाम्पत्य जीवन शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा से मंगल का दोष अल्प माना जाता है। अतः सामान्यतया शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे।

आपकी चन्द्रकुंडली में मंगल की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सामान्यतया मध्यम ही रहेगा तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में परिश्रम तथा पराक्रम से ही सफलता होगी। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आपके आय स्रोतों में उन्नति होगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में आप समर्थ रहेंगी। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि से पारिवारिक शान्ति मध्यम रहेगी। यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद भी उत्पन्न होंगे साथ ही वाणी में भी ओजस्विता का भाव विद्यमान रहेगा। धनऐश्वर्य की स्थिति उत्तम रहेगी। तृतीय भाव पर मंगल की स्थिति के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग सामान्य रहेगा परन्तु पराक्रम में वृद्धि होगी। मन में आत्मविश्वास का भाव बना रहेगा। अतः आप अपने कार्य क्षेत्र में उन्नतिशील रहेंगे एवं मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी।

अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी ऐसे मांगलिक पुरुष से विवाह करना चाहिए जिसकी कुंडली से आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में शनि राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए इस प्रकार मांगलिक दोष भंग हो जाने पर आपके सुख एवं सौभाग्य में वृद्धि होगी। प्रचुर मात्रा में सांसारिक सुखों का उपभोग करते हुए आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा तथा परस्पर संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी एवं एक दूसरे को अपना सहयोग प्रदान करने में आप तत्पर रहेंगे।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में वासुकि नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए कभी दुःखमय हो जाता है। पारिवारिक सदस्यों से किसी समय थोड़ा मनमुटाव हो जाता है। भाई-बहनों से आंशिक रूप में दुःख उठाना पड़ता है। रिश्तेदार थोड़ा बहुत नुकसान पहुँचाते रहते हैं और मित्रगण से भी किसी समय जातक थोड़ी क्षति पाता है। घर में सुख शान्ति का आंशिक अभाव रहता है।

पूजा, पाठ, हवन, दान आदि धर्म कार्य में जातक को विशेष रुचि नहीं रहती है। भाग्योदय होने में आंशिक रूप से बाधाएँ आती हैं तथा नौकरी एवं व्यवसाय के क्षेत्र में किंचित संघर्ष करना पड़ता है और राजकीय सेवा के अवसर भी प्राप्त होते हैं तथा पराक्रम, यश, पद व प्रतिष्ठा के लिए आंशिक संघर्ष करना पड़ता है। जातक विदेश गमन करता है जिसमें थोड़ा बहुत कष्ट झेलना पड़ता है।

इस योग के कारण जातक को शारीरिक रोग-व्याधि समय-समय पर घेर लेती है। जिसमें सामान्य से विशेष खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति नाजुक हो जाती है। कालान्तर में आर्थिक स्थिति सामान्य हो जाती है।

इस योग के कारण जातक कानूनी दस्तावेजों पर भावुकतावश हस्ताक्षर करके आंशिक रूप में नुकसान पाता है और राज्य पक्ष से भी जातक को अल्पमात्रा में प्रतिकूल फल प्राप्त होता है और नौकरी व्यवसाय में निलम्बित होने का भय बना रहता है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक अपने जीवन में बहुत सफलता प्राप्त करता है। विलम्ब से उत्तम भाग्य का निर्माण भी होता है और उन्नति के कई अवसर प्राप्त होते हैं।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।

8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

आपकी कुडली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

मेष राशि में रवि हो तो जातक उदार, गम्भीर, शूरवीर, आत्मबली स्वाभिमानी, प्रतापी, चतुर, पित्तविकारी, युद्धप्रिय, साहसी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी पूर्ण रहेगी। धनैश्वर्य से वे सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही आपके आजीविका या व्यापार संबंधी कार्य भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहायता से सम्पन्न होंगे एवं आप इन कार्यों में वांछित सफलता अर्जित कर सकेंगी।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध प्रायः मधुर ही रहेंगे तथापि यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। जीवन में आप पिता को अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान करेंगी एवं सुख दुःख में सर्वदा उनका सहयोग करेंगी।

चन्द्र

तृतीय,भाव में चन्द्रमा हो तो जातक आस्तिक, तपस्वी, प्रसन्नचित्त, कफरोगी, मधुरभाषी प्रेमी, भाईयों और बहिनों का रक्षक, साहसी, विद्वान, एवं कंजूस होता है।

कन्या राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर, रूपवान, धनी ईमानदार, मधुरभाषी, सदाचारी, धीर, विद्वान, सुखी, सुन्दर वक्ता अधिक कन्या सन्तान वाला, ज्योतिष एवं कला प्रेमी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक कष्ट नहीं होगा। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह की भावना रहेगी तथा जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको निश्छल भाव से सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप में शक्ति, साहस एवं पराक्रम का भाव भी उन्हीं के प्रोत्साहन से जागृत होगा। साथ ही आपको सुन्दर भोजन कराने के लिए भी वे नित्य उत्सुक एवं तत्पर रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति विशेष श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी बातों से सहमत होकर उनकी आज्ञा का पालन करेंगी। इसके साथ ही जीवन में सर्वप्रकार के तन, मन, धन से उनको सहयोग देने के लिए तत्पर रहेंगी अतः एक दूसरें के लिए आप शुभ एवं अनुकूल रहेंगी।

मंगल

दसवें भाव में मंगल हो तो जातक कुलदीपक, स्वाभिमानी, सन्तति कष्टवाला, धनवान्, सुखी, उत्तम-वाहनों से सुखी एवं यशस्वी होता है।

मेष राशि में मंगल हो तो जातक सत्यवक्ता, तेजस्वी, शूरवीर, नेता, साहसी, धनवान्, लोकमान्य, दानी एवं राजमान्य होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा उनमें शारीरिक दुर्बलता भी परिलक्षित होगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त महत्वपूर्ण कार्य की सिद्धि में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपके साथ रहेंगे। तथा नौकरी या व्यापारादि में आपका सहयोग करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। लेकिन कभी कभी आपसी मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अल्प समय तक रहेगी। साथ ही आप उनकी आजीविका संबंधी कार्यों में में यथाशक्ति आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करती रहेंगी।

बुध

ग्यारहवें भाव में बुध हो तो जातक ईमानदार, सुन्दर, पुत्रवान्, सरदार, गायनप्रिय, विद्वान्, प्रसिद्ध, धनवान्, सदाचारी, योगी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं विचारवान् होता है।

वृष राशि में बुध हो तो जातक कुशाबुद्धिवाला, उच्चपद पर आसीन, सुगठित शरीर, दिखावा पसन्द करने वाला, शास्त्रज्ञ, व्यायामप्रिय, धनवान्, गम्भीर, मधुरभाषी, विलासी एवं रतिशास्त्रज्ञ होता है।

गुरु

लग्न (प्रथम) में गुरु हो तो जातक विद्वान् दीर्घायु, ज्योतिषी कार्यपरायण, लोकसेवक, तेजस्वी, प्रतिष्ठित, स्पष्टवक्ता, स्वाभिमानी, सुन्दर, सुखी, विनीत, पुत्रवान् धनवान्, राज्यमान, सुन्दर एवं धर्मात्मा होता है।

कर्क राशि में गुरु हो तो जातक सदाचारी, विद्वान्, सत्यवक्ता महायशस्वी, साम्यवादी, सुधारक, योगी, लोकमान्य, सुखी, धनी, नेता, कुशाबुद्धि एवं वफादार होता है।

शुक्र

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी,

वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

वृष राशि में शुक्र हो तो जातक सुन्दर, ऐश्वर्यवान्, दानी, सदाचारी, सात्त्विक, परोपकारी, अनेक शास्त्रज्ञ, दृढ़, स्वतन्त्रकामुक, शौकीन तबीयत, संगीत-नृत्य तथा अन्य कलाओं में रुचि एवं आलसी होता है।

शनि

पंचम भाव में शनि हो तो जातक आलसी, सन्तानयुक्त, चंचल, उदासीन, विद्वान, भ्रमणशील एवं बातरोगी होता है।

वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक संकीर्ण विचारों वाला, हिंसक, कठोरघ्दय, उतावला, कमजोर स्वास्थ्य, बुरी आदतें, दुःखी, विष से खतरा, निर्धन स्त्रीहीन, क्रोधी, कठोर एवं लोभी होता है।

राहु

तृतीय भाव में राहु हो तो जातक योगाभ्यासी, विद्वान्, व्यवसायी, पराक्रमशून्य, दृढ़विवेकी, अरिष्टनाशक, प्रवासी, दीर्घायु एवं बलवान् होता है।

कन्या राशि में राहु हो तो जातक लोकप्रिय, मधुरभाषी, कविलेखक, गवैया एवं धनी होता है।

केतु

नवम भाव में केतु हो तो जातक सुखाभिलाषी, व्यर्थपरिश्रमी अपयशी, दुःखी एवं 48 वर्ष के बाद भाग्योदय होता है।

मीन राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमी, धार्मिक प्रवृत्तिवाला, कर्णरोगी, प्रवासी, चंचल और कार्यपरायण होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- चन्द्र
(28/09/2018 - 27/09/2028)

चन्द्र महादशा की अवधि दस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह दशा 28/09/2018 को आरम्भ होगी और 27/09/2028 को समाप्त होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्र तृतीय भाव में अवस्थित है जो मानसिक प्रवृत्ति, बुद्धि अध्ययन के प्रति झुकाव, साहस, आपके भाई-बहनों, अफवाहों, गले, हँसली, बाँहों और स्नायु तंत्र का प्रतिनिधित्व करता है।

दस वर्षों की इस अवधि में आपको शांति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी और ईश्वर में आपकी निष्ठा होगी।

स्वास्थ्य :

इस अवधि में आपको सुख और उत्तम जीवन की प्राप्ति होगी। आप स्फूर्ति का अनुभव करेंगे और अपने कर्त्तव्यों का पालन उत्तम ढंग से करेंगे। किसी बड़े रोग या दुर्घटना की सम्भावना नहीं है।

अर्थ और सम्पत्ति :

तृतीय भाव का स्वामी होने के कारण चन्द्र इस बात के संकेत देता है कि आपकी धर्म-कर्म में प्रवृत्ति होगी जिससे आपका जीवन सुखमय, अनुकूल तथा सुव्यवस्थित होगा। इस अवधि में आप बहुत अधिक धनोपार्जन करेंगे और अपनी सम्पत्ति और बैंक बैलेंस में वृद्धि करेंगे। अगर व्यवसायी हैं तो नया व्यवसाय आरम्भ करेंगे और अगर सेवारत हैं तो आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए नये मार्गों की खोज में रहेंगे जिसके लिए आप यात्राओं पर भी जा सकते हैं।

व्यवसाय :

आप अपनी व्यावसायिक स्थिति में सुधार के लिए यात्राओं पर जा सकते हैं क्योंकि आप सक्रिय, यात्रा-प्रिय तथा बहादुर हैं। व्यवसाय में सुधार के लिए किसी कार्य का अवसर भी प्राप्त हो सकता है। आपके मस्तिष्क में नये विचार उभरेंगे जिनकी सामाजिक और व्यवसाय के क्षेत्र में सराहना होगी और वे जीवन की उन्नति और अच्छे कार्य के लिए प्रेरित करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन पूर्ण अनुकूल तथा सौहार्द्रपूर्ण रहेगा क्योंकि आपकी जन्मकुण्डली में चन्द्र की आपके पिता के भाव अर्थात् नवम भाव पर दृष्टि है। पिता के साथ संबंधों में सुधार होगा और दैनिक और व्यावसायिक कार्यों में आपकी बहुत मदद करेंगे। आपको माता से कुछ प्राप्त होने के संकेत हैं। आपके भाई-बहनों के साथ आपके संबंध सौहार्द्रपूर्ण रहेंगे। आपके बच्चे आपके आज्ञाकारी होंगे और कुल मिलाकर पारिवारिक वातावरण तथा जीवन संतोषजनक रहेंगे।

शिक्षा पशिक्षण :

जीवन में नये विषयों के अध्ययन के लिए यह अवधि उत्तम सिद्ध होगी अध्ययन जारी रखने में आपकी रूचि होगी और आप अपना लक्ष्य प्राप्त करने में सफल होंगे।

अंर्तदशा :- चन्द्र - बुध
(28/07/2024 - 28/12/2025)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 1 वर्ष 5 मास रहेगी।

आपके लिए चंद्र महादशा 28/09/2018 को प्रारंभ हुई थी और 27/09/2028 को समाप्त होगी। इसमें बुध की अंतर्दशा 28/07/2024 को प्रारंभ होकर 28/12/2025 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्रिका के एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। एकादश में स्थित होकर बुध पत्रिका के पंचम भाव पर दृष्टि डाल रहा है ओर उसके कारकत्व पर प्रभावी हो रहा है। इस अवधि में आप विभिन्न विषयों में पारंगत बनेंगे। बुद्धि तीक्ष्ण होगी और ज्ञानार्जन की इच्छा बलवती होगी। आप धनी और प्रसन्न होंगे। आपके बहुत से वफ़ादार मातहत होंगे जो कार्य-व्यापार में उन्नति में सहायक होंगे।

विज्ञान में प्रसिद्धि प्राप्त होना संभव है।

शुभत्व में वृद्धि के लिए 6 (रत्ती के पन्ने की सोने की अंगूठी दायें हाथ की मध्यमा उंगली में बुधवार के दिन प्रातःकाल बुध गायत्री मंत्र का जाप करते हुए धारण करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - केतु
(28/12/2025 - 29/07/2026)

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इसके अंतर्गत केतु अंतर्दशा 7 मास की रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 28/09/2018 को प्रारंभ हुई ओर 27/09/2028 को समाप्त होगी। केतु अंतर्दशा 28/12/2025 को प्रारंभ होकर 29/07/2026 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका के नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। नवम भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के तृतीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है। केतु और राहु छायाग्रह हैं जिनकी कोई राशि नहीं होती। वास्तव में वे चंद्रमा के दो पात हैं। मनुष्य के जीवन पर इनका बहुत प्रभाव पड़ता है।

इस अवधि में आपका क्रोध बढ़ सकता है। छोटी-छोटी बातों पर मिज़ाज गर्म हो सकता है। वाक्शक्ति प्रबल रहेगी मगर इसका इस्तेमाल दूसरों को बदनाम करने के लिए कर सकते हैं। दिखावापसंद होंगे मगर स्वभाव अक्खड़ रहेगा। माता-पिता के साथ दुर्व्यवहार और कटुता संभव है। मितत्ययता द्वारा धन संचित करेंगे। अरिष्ट से बचाव के लिए केतु के तांत्रिक मंत्र के 72,000 जाप करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - शुक्र
(29/07/2026 - 28/03/2028)

चंद्र की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 28/09/2018 को प्रारंभ होकर 27/09/2028को समाप्त होगी।

इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 29/07/2026 को प्रारंभ होकर 28/03/2028 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्रिका के एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है।

इस अवधि में आपकी सैलानी प्रवृत्ति प्रबल रहेगी। इससे बहुत से मित्र बनेंगे और लोकप्रियता बढ़ेगी। विपरीत लिंग के व्यक्तियों से भी संबंध प्रगाढ़ होंगे। सुख-सुविधाएं भरपूर रहेंगी। धन का लाभ होगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें :

1. चींटियों को शक्कर और आटा दें।
2. कन्याओं को खीर खिलाएं।
3. भोजन से पहली चपाती निकालकर गाय को दें।
4. लक्ष्मीजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - सूर्य
(28/03/2028 - 27/09/2028)

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष होगी। आपके लिए यह 28/09/2018 को प्रारंभ होगी और 27/09/2028 को समाप्त होगी।

इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 6 मास होगी जो आपके लिए 28/03/2028 से प्रारंभ होकर 27/09/2028 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्रिका में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान, जांघों का परिचायक है। सूर्य एक शक्तिशाली ग्रह है और पिता व आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आप सभी कार्यों में सफल रहेंगे। धन और विद्या का आगमन और संचय होगा। आप बली और प्रसन्न होंगे। वाहन सुख रहेगा, बुद्धि बलवती होगी, उच्चपद की प्राप्ति होगी। पुरखों की जायदाद भी मिल सकती है। आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा, संगीत में रुचि होगी और लोकप्रियता बढ़ेगी।

सूर्य के शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य के वैदिक मंत्र का जाप प्रातःकाल, अगर संभव

महादशा :- मंगल
(27/09/2028 - 28/09/2035)

मंगल की महादशा 27/09/2028 को आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 28/09/2035 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल सप्तम भाव में अपनी ही राशि में स्थित है और आपकी कुण्डली में अति शक्तिशाली रुचक योग की रचना कर रहा है। मंगल की दृष्टि चतुर्थ, पंचम और प्रथम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 10 वर्ष की चन्द्रदशा चल रही थी। चन्द्र के लग्न का स्वामी होने के कारण आपको सम्पत्ति, आरम्भ, सुख और उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति हुई होगी। इस दशा के दौरान आपको यश, ख्याति, उच्च सम्मान की प्राप्ति तथा व्यवसाय में प्रगति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य अति उत्तम रहेगा। आपमें स्फूर्ति और पहलशक्ति होगी और आप पूरी दशा के दौरान सक्रिय रहेंगे। आप प्रतिस्पर्धी तथा स्वतंत्र होंगे और आप में रोगों से लड़ने की क्षमता होगी। मौसम में परिवर्तन के कारण आपको तापसंबंधी बीमारी, फोड़ा या संक्रामक बीमारी हो सकती है। आपकी कुछ छोटी मोटी दुर्घटनाएं हो सकती हैं। उन्हें छोड़कर आमतौर से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

आपको सट्टे तथा निवेश से लाभ होगा। आपकी खुद की कमायी सम्पत्ति होगी। आपको जमीन-जायदाद तथा माता से लाभ होगा। इस अवधि में आपकी प्रतिष्ठा, शक्ति और अधिकार में उन्नति तथा व्यवसाय में प्रगति होगी। आपको सफलता, ख्याति तथा सम्मान मिलेगा। जीविका के लिए सैन्य सेवा, इन्जीनियरिंग, सर्जरी, दवा के क्षेत्र, लोहा-इस्पात से संबद्ध व्यवसाय या पुलिस क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। आप योजना तथा प्रशासन से सम्बद्ध कार्य में अच्छा करेंगे। आप सामुद्रिक पदार्थों तथा कुटीर उद्योग अपना सकते हैं। आप एक सफल सर्जन या देतचिकित्सक हो सकते हैं या आपकी एक सफल तकनी की अथवा कृषि वृत्ति हो सकती है। नौकरीपेशा लोगों को सफलता मिलेगी और आय में वृद्धि तथा उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा।

व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को सफलता मिलेगी, कर्मचारियों की आय में वृद्धि, लाभ की प्राप्ति तथा पद में उन्नति होगी। व्यवसाय में प्रगति और उन्नति के लिये यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

शुक्र की अन्तर दशा में आपको वाहन का सुख मिलेगा। आप अपने वाहन को बदल कर नया ले सकते हैं। बुध की अन्तर दशा के दौरान आपकी यात्रा होगी। जमीन-जायदाद के मामलों के लिये यह दशा उत्तम है। आपको जमीन जायदाद तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। जमीन-जायदाद के सारे मामले आपके लिये लाभदायक होंगे।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप परीक्षा में सफल होंगे और किसी प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। तकनीकी विषय आपके लिए शुभ होंगे। आप विज्ञान, गणित, इन्जीनियरिंग, प्रौद्योगिकी आदि पसन्द करेंगे। आप उच्च शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं और उसमें बहुत अच्छा करेंगे। इस दशा के दौरान आप व्यवसायिक प्रशिक्षण ग्रहण कर सकते हैं। आपकी नेतृत्व तथा संगठन क्षमता सामने आएगी।

परिवार :

परिवार में आप के सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आपको आपके बच्चे से सुख मिलेगा। आपके जीवन साथी के साथ आपका सम्बन्ध सुन्दर रहेगा। आपके जीवन साथी की जीवन वृत्ति सक्रिय होगी, आय में वृद्धि और लाभ की प्राप्ति होगी। अपने परिवार की शान्ति के लिए व्यवहार कुशलता तथा शान्ति से कार्य लेना होगा। आपकी माता को कुछ स्वस्थ्य संबंधी समस्याएं हो सकती हैं। उन्हें लाभ का अवसर मिलेगा। आपके पिता को लाभ, समृद्धि तथा सम्पत्ति को प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों के कार्य में परिवर्तन, अचानक धन तथा उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति होगी। बड़ों का व्यय, यात्रा तथा परिवर्तन होगा। आपके मित्रों तथा परिचितों की संख्या विशाल होगी। आपको ख्याति मिलेगी और आप अपनी नेतृत्व व संगठन की क्षमता के कारण जाने जाएंगे।

अन्तर्दशा :

मंगल की मुख्य दशा में मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपके व्यवसाय में प्राप्ति होगी और आपको यश, ख्याति, प्रतिष्ठा और बच्चों से सुख मिलेगा। राहु की अन्तर्दशा कुछ समस्याएं खड़ी कर सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको सम्पत्ति, जमीन-जायदाद तथा पिता से लाभ की प्राप्ति होगी। शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप कुछ परिवर्तन, स्वास्थ्य-समस्या और साझेदारी में लाभ मिलेगा। इसके बाद बुध की अन्तर्दशा के कारण आपकी यात्रा और व्यय होगा जबकि केतु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप कुछ मानसिक तनाव होगा। शुक्र की अन्तर्दशा के कारण सुख, परिवार का आनन्द और लाभ मिलेगा। सूर्य की अन्तर्दशा आपको आराम और धन का लाभ दिलायेगी जबकि चन्द्र यश, ख्याति, सफलता तथा सुख देगा।

अंर्तदशा :- मंगल - मंगल
(27/09/2028 - 23/02/2029)

आपके लिए मंगल की महादशा 27/09/2028 को प्रारंभ हुई है। इस महादशा के अंतर्गत प्रथम अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 27/09/2028 को प्रारंभ होकर 23/02/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल वीरता, साहस, अचल संपत्ति और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आप परिश्रम और योग्यता के बल पर खूब धन कमाएंगे। जिन कामों में ऊर्जा और दक्षता की जरुरत हो, वहां आप कामयाब होंगे। अचल संपत्ति में निवेश करेंगे या वर्तमान मकान आदि की मरम्मत करवाएंगे। परिवार में शांति बनाये रखने के लिए प्रयास करने होंगे।

आप उत्साही और ऊर्जावान होंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पहले किये गये निवेश से लाभ हो सकता है। जल्दबाजी में फैसले न करें। संतान के स्वास्थ्य का अधिक ध्यान रखना पड़ सकता है।

आपके जीवनसाथी भी खूब ऊर्जावान होंगे। आपके पिता को धनलाभ, घरेलू सुख का योग है। माता को साझेदारी से लाभ हो सकता है, उनकी यात्राएं हो सकती हैं। भाई-बहनों के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है, अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। खर्चे बढ़ेंगे।

आपकी संतान परीक्षा में सफल होगी; उनकी तकनीकी और विस्तृत कार्यो में रुचि होगी। अगर वे सेवारत हैं तो विरोधियों पर विजयी होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो समृद्ध बनेंगे; प्रोन्नति या वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है। व्यापारियों और तकनीकी विशेषज्ञों को सफलता मिलेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा; मामूली तकलीफ हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमानजी की आराधना करें।

अंर्तदशा :- मंगल - राहु
(23/02/2029 - 14/03/2030)

आपके लिए मंगल की महादशा 27/09/2028 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी। आपके लिए यह 23/02/2029 को प्रारंभ होकर 14/03/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक लाभ, परिवर्तन और लंबी यात्राओं का कारक है।

इस अवधि में आप लक्ष्य प्राप्त करने के लिए उत्साह से परिपूर्ण और दृढ़प्रतिज्ञ होंगे। कार्यों में सफलता मिलेगी। शत्रु और स्पर्धी परास्त होंगे। आप उद्यमी, भाग्यवान और धनी होंगे। लाभकारी लघु यात्राएं हो सकती हैं। आप साहसी होंगे और विरोधियों की परवाह नहीं करेंगे। परिवार में कोई विवाह हो सकता है।

आपके जीवनसाथी सौभाग्यशाली रहेंगे। आपके पिता व्यापारिक अनुबंधों में सफल रहेंगे, यात्राएं होंगी, मुकदमे में सफलता मिलेगी, सम्मान बढ़ेगा। आपकी माता को स्वास्थ्य की मामूली समस्या हो सकती है। आपके भाई-बहन धनी बनेंगे, सम्मान में वृद्धि होगी।

आपकी संतान को किसी से अप्रत्याशित सहायता मिल सकती है। अगर वे कार्यरत हैं तो व्यापार में धन कमाएंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की सक्रियता और लाभ में वृद्धि होगी। व्यापारी धनी बनेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। गले की छोटी-मोटी शिकायत हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए हनुमानजी की पूजा करें।